# प्रारम्भिक संबोधन

माननीय सदस्यगण,

सप्तदश बिहार विधान सभा के षष्ठम सत्र के शुभारंभ पर मैं आप सभी का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ ।

वर्त्तमान सत्र में कुल पाँच बैठकें निर्धारित हैं, जिसमें वित्तीय वर्ष 2021-22 के प्रथम अनुपूरक व्यय विवरणी के लिए एक दिन, राजकीय विधेयकों के लिए दो दिन, विनियोग विधेयक तथा गैर सरकारी संकल्प के लिए एक-एक दिन निर्धारित है ।

माननीय सदस्यगण, लोकतांत्रिक मूल्य सदा से हम भारत के लोगों के स्वभाव का अंग रहा है । संवाद से समाधान तक पहुँचना, शासन की स्वच्छंद शक्तियों पर सीमाओं का आरोपण तथा विधि का शासन प्राचीन काल से ही हमारी परंपरा रही है । 75 वर्ष पूर्व जब हमारे यहाँ संसदीय लोकतंत्र स्थापित हुआ तो यही भाव, यही स्वभाव लेकर हम आगे बढ़े । हमारे लिए संविधान केवल एक पुस्तक नहीं है, बल्कि एक विचार है, हमारी निष्ठा का प्रतीक है, पूरा का पूरा जीवन दर्शन है ।

आज जब हम देश की आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, अपने उज्ज्वल अतीत को याद करते हुए हमें उज्ज्वलतर भविष्य की ओर देखना है । अपनी पद-प्रतिष्ठा के अनुरूप दायित्व को निभाने का प्रयास करना है । अधिकार और कर्त्तव्य के बीच एक संतुलन साधना होगा । क्योंकि यदि हमारे अधिकार हैं, तो उसके साथ कर्त्तव्य भी जुड़े हैं, और कर्त्तव्य हैं तभी अधिकार भी मजबूत होते हैं । इसीलिए आज पूरा देश एक स्वर में कर्त्तव्यबोध की बात कर रहा है ।

हम और आप जैसे जनप्रतिनिधि संवैधानिक मूल्यों के भी प्रतिनिधि हैं । अतः हमें अपने मन, वचन और कर्म से इन मूल्यों का न केवल पालन करना है, बल्कि जन-जन तक इस चेतना को लेकर भी जाना है ।

माननीय सदस्यगण, जिस बिहार की मिट्टी से हम और आप जुड़े हैं, उसकी गौरवगाथा कोई क्या कहे ? क्या-क्या कहे ? कितना कहे ? .. जितना कहेंगे, कहने को उतना ही शेष रह जाता है । इसलिए हमारी जिम्मेदारी है कि अपनी गौरवशाली विरासत को संजोते हुए, उसमें अपना सार्थक योगदान भी करें । हमने बिहार विधान सभा भवन के शताब्दी वर्ष को एक मील का पत्थर मानते हुए अपनी विरासत को जन सामान्य तक ले जाने के लिए विधान सभा परिसर में एक डिजिटल संग्रहालय बनाने का विचार माननीय मुख्यमंत्री जी से साझा किया । मुझे बेहद खुशी है कि वे न केवल इस विचार से सहमत हुए बल्कि हर प्रकार से सहयोग करने का विश्वास दिलाया । आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि इस दिशा में काफी तेजी से काम चल रहा है ।

इसी प्रकार हमारी सरकार एम.एल.ए. हॉस्टल तथा अतिथिशाला के निर्माण में भी सराहनीय सहयोग दे रही है ।

माननीय सदस्यगण, आज देश में विधायिका को अधिक से अधिक समावेशी और जनोन्मुखी बनाने की बात हो रही है ।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष के नेतृत्व में उत्कृष्ट विधायिका के मानदंड निर्धारित हो रहे हैं । कर्नाटक विधान सभा के अध्यक्ष के सभापतित्व में उत्कृष्ट विधायिका के पैमाने तय करने के लिए एक समिति बनायी गई है जिसमें मुझे भी शामिल होने का सम्मान मिला है ।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि उत्कृष्ट विधायिका के जो भी मानदंड निर्धारित हो, उन सभी मानकों पर हमारे बिहार की विधायिका श्रेष्ठतम साबित हो और ऐसा होना लाजिमी भी है । क्योंकि बिहार लोकतंत्र की जननी है । इतिहास गवाह है कि लोकतंत्र का विचार और व्यवहार यहाँ गढ़ा गया तथा दुनिया ने उसे आत्मसात किया । जिस महान सदन में हम बैठे हैं वहाँ भी एक से बढ़कर एक महापुरूषों ने लोकतांत्रिक मूल्यों एवं प्रक्रियाओं का श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है । हमें उस विरासत को आगे बढ़ाते हुए राज्य और देश की जनता के सामने विधायी कार्य प्रक्रिया का एक उम्दा उदाहरण पेश करना है । इस दिशा में बढ़ते हुए हमने भी अपने यहाँ उत्कृष्ट विधायक चुनने का विचार रखा है । एक उत्कृष्ट विधायक के क्या गुण होने चाहिए उसके लिए क्या-क्या मानदंड हों, यह निर्धारित करने के लिए आप सभी के सुझाव भी अपेक्षित है ।

आने वाले दिनों में विधान सभा भवन शताब्दी स्तम्भ का उद्घाटन भी होना है, जिसके उद्घाटन के लिए भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी का आगमन संभावित है । इस कार्यक्रम हेतु भी आपके सार्थक और रचनात्मक सहयोग की उम्मीद करता हूँ ।

माननीय सदस्यगण, पाँच कार्य दिवसों का यह सत्र अपने स्वरूप में भले ही छोटा है, लेकिन गुणात्मक रूप से यह व्यापक महत्व का है। अतः हम सबको मिलकर इस सत्र में मिले समय का सकारात्मक सदुपयोग करते हुए जनकल्याण की दिशा में आगे बढ़ना है । हमें यह भाव मन में लेकर चलने का प्रयास करना है कि-

**"आये हो निभाने को जब किरदार जमीं पर,**
**कुछ ऐसा कर जाओ कि जमाना मिसाल दे" ।**